

प्रेस विज्ञप्ति

## आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com \* Fax : 01564-220 233

**लोभ को नष्ट करने के लिए संतोष का अभ्यास करें : आचार्य महाश्रमण**

सरदारशहर 20 जून, 2010

‘अप्रमाद के द्वारा प्रमाद को हटाया जा सकता है। प्रतिपक्ष का प्रयोग करने से पक्ष का नाश हो सकता है, अगर क्रोध को नष्ट करना है उपशम का अभ्यास करना चाहिए। लोभ को नष्ट करने के लिए संतोष का अभ्यास, ऋजुता से माया समाप्त हो जाती है। ठीक इसी तरह जागरूकता से प्रमाद को हटाया जा सकता है। अप्रमाद के लिए आत्मस्थ रहना आवश्यक है। दुनिया में व्यवहार चलाना पड़ता है, अप्रमाद में अपने आप में रहने के लिए भीतर का अभ्यास आवश्यक है।’

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने चौरङ्गिया प्रशाल में उपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि मनुष्य के पास बुद्धि है बुद्धि का प्रयोग अप्रमाद में करने का प्रयास करना चाहिए। अप्रमाद का अभ्यास प्रमाद के विनाश में सहाय बनेगा। प्रमाद के तरीके अलग हो सकते हैं। प्रमाद मात्र साधना के विकास के लिए निवारणीय होता है। जहां एक मजदूर वेतन पूरा लेता है और काम कम करता है तो वह मालिक का शोषण करता है इसी तरह यदि एक मालिक मजदूर से काम पूरा लेता है और पैसा कम देता है तो मजदूर के साथ शोषण होता है जहां शोषण होता है वहां प्रमाद होता है, पाप होता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने यह भी कहा कि अर्थ, काम, धर्म में समानता होनी चाहिए जिससे जीवन अच्छा चल सकता है।

इस अवसर पर शिवलाल शास्त्री ने मुक्तक द्वारा अपने विचार व्यक्त किये, मास्टर पवनकुमार ने अपने गीत द्वारा भावनाएं व्यक्त कीं। अहमदाबाद तेरापंथ युवक परिषद के ग्यारह सदस्य उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किये तथा आचार्यश्री महाश्रमण को अहमदाबाद किशोरमण्डल की डायरेक्ट्री भेंट की।

लूणकरण, कालू क्षेत्र से संघबद्ध आए श्रद्धालुओं ने अपनी भावनाएं प्रस्तुत कीं। बीदासर निवासी मुंबई प्रवासी लक्ष्मीपत चौरङ्गिया का परिवार आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में संबल प्राप्त करने उपस्थित हुआ। आचार्यश्री महाश्रमण ने उन्हें संबल प्रदान करते हुए कहा कि उनके पारिवारिकजन मनोबल और धैर्य बनायें रखें तथा उनकी विशेषताओं को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

– शीतल बरङ्गिया (मीडिया संयोजक)